मिथिला मिहिर

'मिथिला मिहिर' क प्रकाशन 1909 ई०मे प्रारम्भ भेल तथा बीच-बीचमे बन्द होइतहु प्रकाशन बराबरि होइत रहल। एकर प्रमुख सम्पादकक रूपमे विष्णुकान्त झा 'शास्त्री' (1909-12) म०म० परमेश्वर झा, जगदीश प्रसाद ओझा, ओ योगानन्द ठाकुर (1912-19) जनार्दन झा 'जनसीदन' (1919-21) कपिलेश्वर झा 'शास्त्री' (1921-35) श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' (1935-51) श्री सुधांशु शेखर चौधरी (1960-[illegible]) 1982 ई० सँ जनवरी 1984 ई० धरि साप्ताहिक रूपेँ श्री हीरानन्द शास्त्री ओ श्री गोकुलनाथ झाक सम्पादन मे छपल। पुनः एकर प्रकाशन बन्द भऽ गेल। एकर स्थान उदयभेल दैनिक मिथिला-मिहिर क रूपमे फरवरी, 1984 सँ मई 1986 ई० धरि। पुनः पाक्षिकरूपमे एकर प्रकाशन मार्च, 1987 ई० सँ दिसम्बर 1987 धरि छपल। 1989 ई० सँ ई पत्रिकाक प्रकाशन बन्द अछि।

आरम्भ मे एहिमे लेख सभ मैथिलिक स्थान हिन्दीमे लिखल जाइत छल। 1930-31मे अंग्रेजिक लेख सेहो देल छल। परन्तु धीरे-धीरे मैथि हिन्दी एवं अंग्रेजीक स्थान गौण भेल ओ मैथिलिक स्थान प्रधान। तहिआ सँ 'मिहिर' मिथिलाक गौरव तथा मैथिली साहित्यक संवर्धनक प्रधान वाहन रहल। '08 पश्चात पटना सँ प्रकाशित 'मिहिरक' द्वारा प्रयोगशील मौलिक साहित्यक विकासक माध्यम भेटलैक।

अपन समयक महत्वपूर्ण पत्रिका होएबाक कारणे एहिमे अनेक स्तम्भक संकलन होइत रहल। यथा- सहमति, असहमति, धार्मिक कथा, स्त्रीगण समाज, विज्ञान लोक, देश-देशान्तर, क्रीडाजगत, साप्ताहिक राशिफल, हास्यस्तम्भक रूपमे 'गोनू झाक चौपाल', 'धूमकेतुआनन्दक बलापिगो', 'बहिरा नाचे अपना ताले', पाठकीय प्रतिक्रिया, विचारमंच आदि अनेक स्तम्भ छपैत रहल।

एकर अतिरिक्त उपन्यास अंक, कविता अंक, निबंध अंक, लघु कथा अंक, सत्यकथा अंक, विद्यापति अंक, होलिकांक ~~स्मृति~~ आदि अनेक विशेषांक समय-

समय पर प्रकाशित होइत छल। एहिमे कथा अंकक प्रकाश प्रत्येक अंकमे होमय लागल। ते कहल जाइत अछि जे पत्रिका क माध्यमसँ मैथिली कथाक सर्वाधिक विकास भेल। समग्र भाषाक स्वरूपमे स्थिरता अनबाक ओ कथा साहित्यकेँ विश्व अन्य भाषाक कथासाहित्यक समकक्ष ठाढ़ करबाक श्रेय पत्रिका केँ छैक।

मिथिलाक्षरक विकास करबाक दिशामे सेहो एकर महत्वपूर्ण योगदान अछि। मिथिलाक्षरक तीन प्राथमिक उद्देश्य सँ ~~बहुतो दिन धरि~~ वर्णमाला, संयुक्ताक्षर ओ मात्रा आदि एहिमे बहुतो दिन धरि छपैत रहल।

साप्ताहिक मिथिला मिहिरसँ अनेकानेक प्रतिभा शाली साहित्यकारक उदय भेल। साप्ताहिक रूपमे एकर प्रकाशनक अंत भऽ गेला उत्तर साहित्यक ई विकास धारा अवरुद्ध भऽ गेल। ओना दैनिक ओ पाक्षिक रूपमे एकर प्रकाशन सेहो भेल मुदा ओ तकर क्षतिपूर्ति नहि क सकल। अद्यावधि ओकर अभाव साहित्य प्रेमीकेँ रहल छनि।